FCXKQR

19 दिव्यांगता अभिशाप नहीं

नरेश को दूसरे शहर जाना था। घर से सामान लेकर उसे रेलवे स्टेशन पहुँचना था। वह अपने घर से चौराहे पर ऑटो–रिक्शा लेने के लिए गया। चौराहे पर एक ऑटो–रिक्शा खड़ा था। वह ऑटो–रिक्शा के ड्राइवर को ढूँढ़ रहा था।

एक बीस–बाईस बरस का नौजवान बैसाखियों के सहारे चलकर आया और उसने पूछा– आपको कहाँ जाना है?

नरेश बोला–मुझे स्टेशन तक जाना है। उस दिव्यांग नौजवान ने कहा, चलिए चलते हैं।

नरेश को भरोसा ही नहीं हुआ कि यह दिव्यांग नौजवान ऑटो–रिक्शा चला सकता है।

नरेश ने शंका करते हुए पूछा– मगर आप ऑटो–रिक्शा कैसे चलाएँगे?

बैसाखियों के सहारे कदम आगे बढ़ाते हुए उसने कहा भरोसा तो कीजिए भाई साहब!

मेरी एक टाँग खराब है तो क्या हुआ, मैं ऑटो–रिक्शा चला सकता हूँ।

नरेश ने कहा– कोई बात नहीं। मुझे तो समय पर स्टेशन पहुँचना है।

उसने अपनी दोनों बैसाखियाँ ऑटो–रिक्शा में रखीं और नरेश को ऑटो–रिक्शा में बिठाकर चल दिया। रास्ते में नरेश ने उससे बातचीत की।

नरेश को ऑटो–रिक्शा चालक से रास्ते में बातचीत के दौरान पता चला कि उसका नाम रमेश है और उसे बचपन में ही पोलियो हो गया था। पोलियो के कारण उसकी एक टाँग खराब हो गई। लेकिन रमेश ने हिम्मत नहीं हारी। उसने कक्षा बारहवीं तक की पढ़ाई पूरी कर ली। इसके बाद आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए कुछ काम करने की ठानी। रमेश ने बैंक से कर्ज लेकर एक ऑटो खरीद लिया, उससे अपना और अपने परिवार का भरण–पोषण करता है और सम्मान की जिंदगी जी रहा है।

नरेश को अचरज हो रहा था कि कैसे रमेश ने उसको सही– सलामत स्टेशन तक पहुँचा दिया।

D;k rqEgkjs vkl&ikl Hkh dksbZ fn0;kax 0;fDr gS

----

vxj gk¡ rks] mls fdl rjg dh fn0;kaxrk gS

D;k og dksbZ dke djrk gS

पल्स पोलियो अभियान के बारे में तो तुमने सुना होगा। इसके तहत देश भर में शून्य से छः साल तक के बच्चों को शासन द्वारा पोलियो की खुराक पिलाई जाती है। पोलियो बचपन में होने वाली एक प्रकार की बीमारी है। इसमें बच्चों की टाँगें टेढ़ी या खराब हो जाती हैं।

पल्स पोलियो अभियान के बारे में अपने शिक्षक या स्वास्थ्य विभाग से और जानकारी प्राप्त करो तथा यहाँ लिखो।

राजाराम को जन्म से ही दिखाई नहीं देता। राजाराम को उसके माता–पिता ने अपने जिले में चल रहे दिव्यांग स्कूल (दिव्यांगों के लिए विशेष स्कूल) में भर्ती करा दिया। वहाँ उसने अपनी पढ़ाई की। आगे चलकर उसने ऊँची शिक्षा भी प्राप्त की। अब वे बैंक में नौकरी कर रहे हैं।

सोचो, उसे दिखाई नहीं देता फिर भी उसने अपनी पढ़ाई कैसे की होगी?

दृष्टि बधित व्यक्तियों के लिए खास तरह की लिपि बनाई गई है। इसको ''ब्रेल लिपि'' के नाम से जाना जाता है। हम किताब में छपी जानकारी आदि को आँखों से देखकर पढ़ते हैं, वहीं ब्रेल लिपि के जरिए अक्षरों को छूकर पढ़ा जाता है। जिनको दिखाई नहीं देता है, उनको ब्रेल लिपि के जरिए पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

ब्रेल लिपि के जन्मदाता भी एक दृष्टि बधित व्यक्ति ही थे। उनका नाम लुई ब्रेल था। लुई ब्रेल बचपन में खेलते हुए अपनी आँखें खो चुके थे। लेकिन लुई ब्रेल के माता–पिता ने भी हिम्मत नहीं हारी। लुई के माता–पिता नहीं चाहते थे कि वह पढ़ाई में पीछे रहे और दूसरों पर निर्भर रहे।

लुई को दिखाई नहीं देता था, लेकिन घर में वह अपनी माँ की काफी मदद करते थे। वे रोज सुबह उठकर कुएँ से पीने का पानी भरकर लाते थे। कभी–कभी वे रास्ते में पत्थर आदि से टकराकर गिर जाते। लेकिन धीरे–धीरे उनको हर कदम की पहचान हो गई। उनके पिता ने एक पतली छड़ी बना दी। लुई चलते समय अपनी छड़ी को हवा में लहराते। अगर उनकी छड़ी किसी चीज से टकराती तो वह तुरंत अपना रास्ता बदल लेते।

लुई कई चीज़ों को उनकी खुशबू से जान लेते थे। वे ज्यादातर चीज़ों की पहचान उनकी आवाज़ों से करते थे। वे अपने यहाँ के सभी लोगों को उनकी अलग–अलग आवाज़ों से पहचान लेते थे।

D;k rEgkj vklikl Hkh dkbZ nf"Vcf/kr 0;fDr g tk bu lc ckrk dk irk dj ikrk g

og viu dke dl djrk g\ dku l dke og [kn gh dj ikrk g\ dku&l dke nlljk dh enn l djrk g

लुई बहुत स्वाभिमानी थे। लेकिन जब उनको कोई कहता कि ''देखो बेचारा लुई जा रहा है'' तो उनको गुस्सा आता था।

लुई को पढ़ना नहीं आता था। लेकिन वे कई लोगों से बातें करते और उनसे कहानियाँ सुनते। इससे वे काफी कुछ सीख गए थे।

nf"Vckf/krk d fy, fdrkc

डेढ़ सौ साल पहले दृष्टिबाधित बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें नहीं थी। तब हर अक्षर को कागज पर उभारा जाता था, जिससे कि उन्हें छूकर पहचाना जा सके। कुछ अक्षरों को पहचान पाना तो आसान था, लेकिन कुछ को पहचानने में काफी मुश्किल होती थी।

इन समस्याओं का हल लुई ब्रेल ने किया। उन्होंने दृष्टिबाधित बच्चों के लिए पढ़ने की आसान लिपि की खोज की। अँग्रेजी के अलग–अलग अक्षरों के लिए अलग संकेत बनाए।

उन्होंने अँग्रेजी के अक्षरों के संकेतों को मोटे कागज़ पर सूजे से छेद करके तैयार किया। जब कागज पर सूजे से छेद किए जाते हैं तो दूसरी ओर उभार बन जाते हैं। बस यही तरीका अपनाया गया।

fgUnh e cy fyfi

यहाँ हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों के संकेत दिखाए गए हैं। यह हिन्दी की ब्रेल लिपि है। इसमें कागज पर इन बिंदियों के उभार होते हैं। इन उभारों को दृष्टिबाधित व्यक्ति छूकर पहचान पाता है।

^i<r le; dh cy fyfi*

d l fy[k vkj i< cy fyfi e

तुम मोटे कागज़ पर सूजे या मोटी सुई की मदद से इस प्रकार छेद करो कि उभार चित्र के नीचे दिखाए संकेत जैसे हों। इस बात का ध्यान रखना कि इन संकेतों को कागज़ पर दाएँ से बाएँ उकेरते हैं और पढ़ते हैं तो बाएँ से दाएँ।

इन छः बिंदियों में से एक, दो या अधिक को अलग–अलग तरह से जमाकर अक्षर बनाए जाते हैं। इन बिंदियों को उकेरते समय नंबर देते हैं। 1 • • 4 / 2 • • 5 / 3 • • 6 पर यही क्रम पढ़ते वक्त बदल जाता है। क्रम 4 • • 1 / 5 • • 2 / 6 • • 3 हो जाएगा जैसे– 'त' के लिए 1 • / 2 • / • 5 / • 6 संकेत उकेरते हैं। पढ़ते वक्त यह 5 • / 6 • • 1 / • 2 ऐसा दिखेगा क्योंकि पढ़ते वक्त पेज पलट देते हैं।

एक और बात, देवनागरी में लिखते समय हमारे पास मात्राएँ होती हैं। जैसे नरेश में 'न' के बाद 'र' व 'र' के ऊपर 'ए' की मात्रा। परन्तु ब्रेल में मात्राएँ नहीं होती हैं। इसके पहले 'न' का संकेत फिर 'र' का संकेत, फिर 'ए' का संकेत फिर 'श' का संकेत बनेगा।

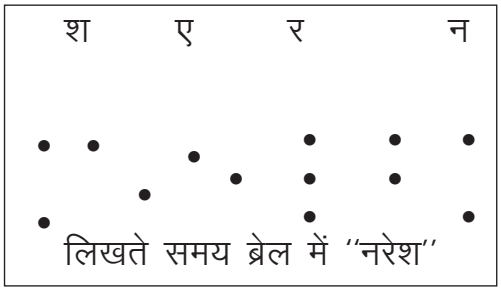

लिखते समय ब्रेल में ''नरेश''

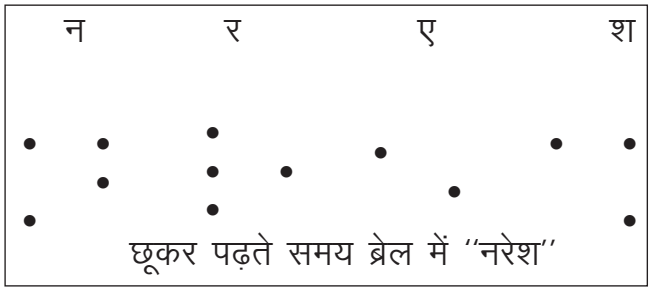

छूकर पढ़ते समय ब्रेल में ''नरेश''

एक और बात ध्यान रखनी है। लिखते वक्त दाएँ से बाएँ लिखेंगे तभी तो पढ़ते वक्त हम उभारों को छूने के लिए कागज को पलटकर बाएँ से दाएँ पढ़ेंगे।

पिछले पृष्ठ पर 'पढ़ने का चार्ट' दिया है। क्या तुम बता सकते हो कि लिखते वक्त ये संकेत कैसे दिखेंगे?

सूजे या कील की मदद से ब्रेल लिपि में तुम अपना–अपना नाम लिखो।

तुम ब्रेल लिपि में अपने दोस्त का नाम पढ़ने की कोशिश करो। क्या तुम नाम पढ़ पाते हो?

आजकल ब्रेल लिपि में काफी किताबें उपलब्ध हैं। दृष्टिबाधितों के लिए हर जिले में स्कूल भी हैं।

यदि तुम्हें ब्रेल लिपि में कहीं कोई किताब मिले तो तुम जरूर पढ़ने की कोशिश करना।

तुमने आस–पास दिव्यांगों को देखा होगा जो खाना या पैसे माँगते हैं।

सोचो, क्या यह उचित है ?

इन्हें सक्षम बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

पता करो इनके लिए कौन–कौन सी संस्थाएँ काम कर रही हैं ?

सरकार इनके लिए कौन–कौन सी योजनाएँ चला रही है ?

कई बार हमारे आस–पास रहने वाले लोग दिव्यांगों का मजाक उड़ाते हैं। क्या यह उचित है?

---

geu D;k lh[kk \

ekf[kd

1. लुई को जब दिखाई नहीं देता था, तब वे क्या करते थे और वह चीज़ों को कैसे पहचानते था ?
2. रमेश के दिव्यांग होने का क्या कारण था?

fyf[kr

1. ब्रेल लिपि में पढ़ने व लिखने की विधि में क्या अन्तर है और क्यों?
2. दृष्टिबाधित ब्रेल लिपि की मदद से अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं तथा दूसरों के विचारों को जान सकते हैं। पता करो कि जो लोग सुन नहीं पाते हैं वे कैसे अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं?
3. तुम किस प्रकार किसी दिव्यांग को सक्षम बनने के लिए प्रेरित कर सकते हो?

[kkt vkl&ikl

1. अपने आस–पास ऐसे व्यक्ति का अवलोकन करो जिसे दिखाई नहीं देता। पता करो कि वह अपने काम कैसे करता है?
2. पत्र पत्रिकाओं से दिव्यांगों से संबंधित जानकारी इकट्ठी करें।
3. दृष्टिबाधित दिव्यांगता के अलावा और कौन–कौन सी दिव्यांगताएँ पायी जाती हैं, पता करें, वे अपना जीवन कैसे सरल बनाते हैं।

FD7GSE